

DR. BALDEV SINGH DHILLON

Dr. Baldev Singh Dhillon, Vice Chancellor of Punjab Agricultural University (PAU) Ludhiana since 2011, is an internationally known scientist in agriculture. He is a dedicated scientist and visionary administrator who has provided leadership in developing technologies for sustainable agriculture.

2. Born on June 27, 1947 at village Daburji in Tarn Taran district, Punjab, Dr. Dhillon obtained B.Sc. from Khalsa College, Amritsar, M.Sc. from PAU and Ph.D from Indian Agricultural Research Institute, New Delhi. He has brilliant academic record and was recipient of scholarships, fellowships throughout the degree programmes. He was awarded prestigious German Academic Exchange Service (DAAD) and Alexander von Humboldt Fellowships to work at University of Hohenheim, Germany and Alexander von Humboldt Europe Fellowship to work at University of Birmingham, UK. He has diverse experience of working in PAU, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), University of Hohenheim and International Maize and Wheat Improvement Centre (CIMMYT), Mexico during his professional career.

3. As Director, ICAR-National Bureau of Plant Genetic Resources, New Delhi, Dr Dhillon led large scale acquisition of plant germplasm under Jai Vigyan Mission Mode Project and national genebank became the third largest germplasm repository in the world with 3.03 lakh accessions. He actively participated in negotiations on the formulation of International Treaty of Plant Genetic Resources for Food and Agriculture by FAO, Rome. As Vice Chancellor, he took several new initiatives in research with emphasis on rational use of soil and water resources and applied inputs (fertilizers. agro chemicals. etc.), value addition and food processing, farm mechanization, organic farming, biofertilizers, bioagents and plant biotechnology to improve resource use efficiency and climate resilience. PAU also strengthened linkages with industry particularly the food processing, seed and farm machinery. As a result of overall improvement in research, teaching and outreach programmes carried out under his leadership, PAU won Sardar Patel Outstanding ICAR Institution Award (2017) and has been identified as 'Institute of Excellence' by the Empowered Expert Committee of MHRD.

4. Dr. Dhillon developed a number of varieties and hybrids of maize including 'Pares' in 1995, which led to reorientation of maize breeding programme in India from multiple to two-parent hybrids. He also developed new breeding methods that give higher genetic gain per unit compared to the earlier ones. He refined methods of genetic analysis to obtain more reliable information for the use in crop breeding. His pioneering research has enabled commercial cultivation of maize during non-traditional spring winter seasons in Northern-Western India. As Vice Chancellor (PAU), he led the Joint Inter-State (Punjab, Haryana, Rajasthan) campaign that successfully managed the white fly incidence in cotton resulting in bumper crop with record productivity accompanied by use of lesser quantity of pesticides during 2016 and 2017. He also jointly led the campaign on paddy straw management during 2018 that resulted in significant decrease in straw burning in the Punjab State.

5. Dr. Dhillon is the Fellow of many prestigious academies including Indian National Science Academy, National Academy of Agricultural Sciences, National Academy of Sciences, India and Punjab Academy of Sciences in recognition of his services. He was conferred Dr. BP Pal Memorial Award, the Apex honour of National Academy of Agricultural Sciences, the prestigious Rafi Ahmed Kidwai Memorial Prize by ICAR, Om Parkash Bhasin Award for Science and Technology, JC Bose National Fellowship by DST, Asian Maize Champion Award by CIMMYT and many other awards.

पद्म श्री

डॉक्टर बलदेव सिंह ढिल्लों



डॉ. बलदेव सिंह ढिल्लों वर्ष 2011 से पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के कुलपति हैं। आप कृषि के क्षेत्र में एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं। आप एक ऐसे समर्पित वैज्ञानिक और दूरदर्शी प्रशासक हैं जिन्होंने किफायती कृषि के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने में अगुवाई की है।

2. आपका जन्म 27 जून, 1947 को तरण-तारण जनपद, पंजाब के डाबरजी गांव में हुआ। आपने खालसा कॉलेज, अमृतसर से बीएससी, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से एमएससी और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपका शैक्षिक रिकॉर्ड अत्यंत शानदार रहा और आपने सभी डिग्री पाठ्यक्रमों में छात्रवृत्ति और फेलोशिप हासिल की। ऑनहायम विश्वविद्यालय, जर्मनी में काम करने हेतु आपको प्रतिष्ठित जर्मन अकैडमिक एक्सचेंज सर्विस(डीएएडी) और एलेक्जेंडर वॉन हमबोल्ट फेलोशिप्स तथा बर्मिंघम विश्वविद्यालय, यूके में काम करने हेतु एलेक्जेंडर वॉन हमबोल्ट यूरोप फेलोशिप प्रदान की गई। आपको अपने व्यावसायिक करियर के दौरान पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), ऑनहायम विश्वविद्यालय और इंटरनेशनल मेज़ एंड व्हीट इंप्रूवमेंट सेंटर (सीआईएमएमवाईटी), मैक्सिको में कार्य करने के नानाविध अनुभव प्राप्त हैं।

3. आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज, नई दिल्ली के निदेशक के रूप में आपने जय विज्ञान मिशन मोड प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्लांट जर्मप्लाज्म के बड़े स्तर पर अधिग्रहण का नेतृत्व किया और नेशनल जेनबैंक 3.03 लाख परिग्रहण के साथ दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा जर्मप्लाज्म भंडार बना। आपने एफएओ, रोम द्वारा खाद्य और कृषि के लिए प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज की अंतर्राष्ट्रीय सन्धि के प्रतिपादन से संबंधित विचार-विमर्श में सक्रिय रूप से भागीदारी की। कुलपति के रूप में आपने मृदा और जल संसाधनों तथा प्रयुक्त आगतों (उर्वरकों, कृषि रसायनों आदि) के तर्क संगत उपयोग पर जोर देते हुए अनुसांधन के क्षेत्र में कई नई पहलें की हैं और संसाधन उपयोग कौशल तथा क्लाइमेट रिजिलेन्स में सुधार करने हेतु मूल्य संवर्धन और खाद्य प्रसंस्करण, कृषि मशीनीकरण, जैविक खेती, जैव उर्वरक, बायोएजेन्ट्स, प्लांट बायोटेक्नोलजी के क्षेत्र में भी कार्य किया है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय ने विशेष रूप से खाद्य प्रंसस्करण, बीज और कृषि मशीनरी उद्योग के संयोजन को मजबूत बनाया। आपके नेतृत्व में चलाए गए अनुसंधान, शिक्षण और पहुंच कार्यक्रमों में व्यापक सुधार के परिणामस्वरूप पंजाब कृषि विश्वविद्यालय ने सरदार पटेल आउटस्टैंडिंग आईसीएआर इंस्टिट्यूशन अवॉर्ड (2017) प्राप्त किया और एमएचआरडी की अधिकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा इसे"इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस" भी चुना गया।

4. आपने मकई की कई किस्में और संकर नस्लें विकसित कीं जिनमें वर्ष 1995 में 'पेयर्स' शामिल है, जिसने भारत में बहुल से लेकर दो प्रजनक संकर नस्ल वाले मकई ब्रिडिंग कार्यक्रम का पुनर्भिमुखीकरण किया। आपने नए ब्रीडिंग तौर-तरीके भी विकसित किए जो पुरानों की तुलना में प्रति यूनिट अधिक आनुवांशिक प्राप्ति प्रदान करता है। आपने आनुवांशिक विश्लेषण के तौर-तरीके को परिष्कृत किया ताकि क्रॉप ब्रीडिंग में उपयोग के लिए और अधिक विश्वसनीय जानकारी प्राप्त की जा सके। आपके अग्रणी अनुसंधान ने उत्तरी-पश्चिमी भारत में गैर-परंपरागत स्प्रिंग विंटर सीजन के दौरान भी मकई के वाणिज्यिक उत्पादन को संभव बनाया। कुलपति (पंजाब कृषि विश्वविद्यालय) के रूप में, आपने संयुक्त अंतरराज्यीय (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान) अभियान का नेतृत्व किया जिसने कपास की खेती में सफेद कीटों के प्रकोप का प्रबंधन किया तथा इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2016-17 के दौरान कीटनाशकों के न्यूनतर प्रयोग के साथ रिकॉर्ड उत्पादन हुआ और बंपर फसल हुई। आपने वर्ष 2018 के दौरान धान की पराली के प्रबंधन से जुड़े अभियान का भी संयुक्त रूप से नेतृत्व किया जिसके परिणामस्वरूप पंजाब राज्य में पराली जलाना बहुत कम हो गया।

5. आपकी सेवाओं का सम्मान करते हुए आपको कई प्रतिष्ठित अकादमियों द्वारा फैलो बनाया गया है जिनमें इंडियन नेशनल साइंस अकैडमी, नेशनल अकैडमी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, नेशनल अकैडमी ऑफ साइंसेज, इंडिया एंड पंजाब अकैडमी ऑफ साइंसेज शामिल हैं। आपको नेशनल अकैडमी ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज के सर्वोच्च सम्मान डॉ. बी.पी. पाल मैमोरियल अवॉर्ड, आईसीएआर द्वारा प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई मैमोरियल प्राइज, विज्ञान और तकनीकी के लिए ओम प्रकाश भसीन अवॉर्ड, डीएसटी द्वारा जे.सी. बोस नेशनल फैलोशिप, सीआईएमएमवाईटी द्वारा एशियन मेज चैंपियन अवॉर्ड तथा अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।